श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये
श्री शत्रुंजय-मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : 3

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर Answer Sheet
2021-22

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	व्रतधारी
(२)	प्रत्याख्यानावरणीय
(३)	दोषरहित
(४)	संहरण।
(५)	सम्यग्दृष्टि
(६)	कल्याण।
(७)	देशविरति
(८)	वनीपकदोष
(९)	अनादिकाल
(१०)	उपद्रव
(११)	अपाय विचय
(१२)	आच्छेद्यदोष
(१३)	विलय
(१४)	लोभ
(१५)	क्रोधसंज्ञा
(१६)	आधाकर्मी दोष
(१७)	प्रमत्तसंयत गुणस्थान
(१८)	भावलेश्या।
(१९)	क्रीत दोष
(२०)	अज्ञानतावश।

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	सचित्ताहार
(२)	देवपिंड
(३)	पुण्यानुबंधी
(४)	कुमठासुर
(५)	आत्मपरिणाम
(६)	स्थापना। दोष
(७)	कुमारपाल राजा
(८)	निशिथ सूत्र
(९)	रथावर्त
(१०)	कषाय
(११)	"म्रक्षित दोष"
(१२)	ईडरु
(१३)	संस्थान विचय,
(१४)	आत्मा की समाधि
(१५)	देवगति

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	स्त्रियों ने
(२)	विकलेन्द्रिय
(३)	दुष्ट ग्रह
(४)	छह आवश्यक
(५)	वैक्रिय कारसमय
(६)	आलंबन
(७)	उन दोनों का
(८)	अलग अलग प्रकार के
(९)	नमस्कार किये गये
(१०)	प्रगट
(११)	समचतुरस्त्र
(१२)	अव्रती
(१३)	तीव्र उदय
(१४)	कारण रूप हैं।
(१५)	संघयण रहित
(१६)	इस स्तोत्र के
(१७)	आकार वाले
(१८)	शमन करो।
(१९)	श्रावक
(२०)	मनुष्यों को

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	९	(६)	१०
(२)	८	(७)	१
(३)	५	(८)	४
(४)	६	(९)	3
(५)	६	(१०)	2

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	3 रे भव में
(२)	१८
(३)	४
(४)	१ करोड
(५)	१०४ प्रकृति
(६)	४ मुहूर्त तक
(७)	22 अभक्ष्य
(८)	४2
(९)	3
(१०)	६७

प्रश्न-६ ✓ या × / प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

	प्रश्न-६		प्रश्न-७
(१)	×	(१)	४
(२)	×	(२)	१४
(३)	×	(३)	१७
(४)	✓	(४)	3
(५)	✓	(५)	१६
(६)	×	(६)	20
(७)	✓	(७)	७
(८)	✓	(८)	११
(९)	✓	(९)	१५
(१०)	×	(१०)	९

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ________________ जांचनेवाले की सही ________________

प्रश्न - ८

१. धर्मध्यान के ४ भेद है। (१) आज्ञा विचय (२) अपाय विचय (३) विपाक विचय (४) संस्थान विचय
(१) अन्य मतावलंबियों से बाधित हुए बगैर सर्वज्ञ परमात्मा की आज्ञा का स्वीकार करके तत्व का विचार करना उसे आज्ञा विचय धर्मध्यान कहते है। (२) राग और द्वेष से जीव को जो कुछ होता है, राग-द्वेष के कटु परिणाम का चिंतन उसकी विचारणा करना वह अपाय विचय धर्मध्यान है।

(३) साधु और श्रावक दोनो जाग्रत न हो तो श्रावक के १६ दोष एवं साधु के १६ दोष ऐसे कुल ३२ दोष लगते है। श्रावक का दोष - (१) औद्देशिक दोष → परिवार के लिये बन रही रसोई मे साधु के लिये ज्यादा की रसोई बनाने की लगाये की साधु साध्वी भगवंत आयेंगे तो वोहरायेंगे ऐसा सोचकर बनाने लगाये तो वो औद्देशिक दोष है। साधु का दोष → आहार वोहराते वक्त दोष की शंका होने के बावजुद ध्यान दिये बिना आहार ग्रहण करे तो वो "शंकित दोष" कहलाता है।

(२) वज्रस्वामी - वज्रस्वामी आठ वर्ष के हुए तब पूर्व भव के मित्र जृंभक देव ने शक्कर कोल्हापाक की भिक्षा देना चाही पर अनिमेष दृष्टि से देख, देवपिंड ज्ञान वज्रमुनि ने भिक्षा स्विकारी नहीं, इससे प्रसन्न हुए देव ने उन्हे वैक्रिय लब्धी दी फीर एक बार देवो ने घेवर वोहराना चाहा, उसे भी देवपिंड ज्ञान नही लेने वाले वज्रमुनि को उन्होंने आकाशगामिनी विद्या दी।

४. संज्ञा - सब को चार, दश संज्ञा होती है। आहार, भय, मैथुन और परिग्रह का इन ४ संज्ञा का समावेश है। दश संज्ञाओं में यह चार संज्ञा और इसके साथ ओघ संज्ञा, लोक संज्ञा एवं क्रोध, मान, माया, लोभ का समावेश होता है। गति के अपेक्षा से ऐसा कहा जाता है की तिर्यंचो को विशेषता से आहार और माया संज्ञा होती है। मनुष्य में मैथुन और मान संज्ञा विशेष से होती है। नरक गति में भय और क्रोध संज्ञा विशेष से होती है। देवगति में परिग्रह एवं लोभ संज्ञा विशेष से होती है।

५. ~~संकटाहार~~ - इस स्तोत्र मे ही प्रार्श्वनाथ प्रभू के आश्चर्यकारी महात्म्य का विशिष्ट रीत से वर्णन कर गुणगान पूर्वक अत्यंत भक्तिपूर्वक स्तवना की गई है। उन्हें याद करने वाले उपद्रव विपतियां और दुःख नाश हो जाते है। नये नहीं होते। इन प्रभू का नाम भी मंत्र समान है, तथा इस स्तोत्र मे महा प्रभावशाली अठराह अक्षर का मंत्र है। उसे जानने वाला प्रगट रूप से ही प्रार्श्वनाथ प्रभू का ध्यान कर सकता है। यह बताया गया है।